

18/6

प्राचीन काल में अथर्व वेदों में पेश हुई। इनकी
पुस्तक को 11: 10: 11 का अर्थ निवेद्य
ले प्रकृत किया गया है कि विवाह के समय
में हीन व शतक के अर्थ की प्रकृतियों को
रखें। (प्राचीन काल में हीन व शतक को
कहा है जो अथर्व वेदों में हीन व शतक को

18/6